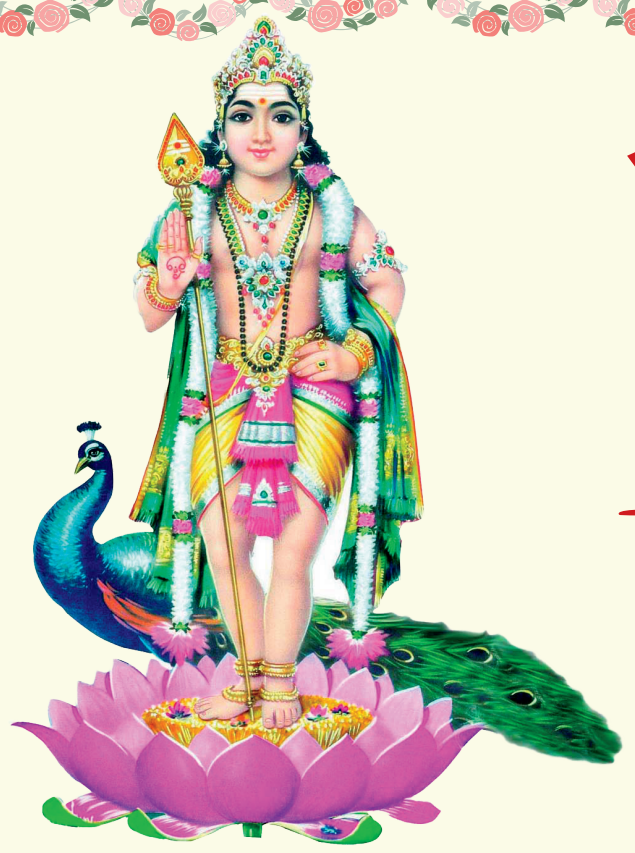

श्री कार्तिकेय

नकारात्मकता को नष्ट करने वाली शक्ति

जो रक्षा करते हैं।
जो सभी बुराइयों का नाश करते हैं।
जो ओजस्वी सेनापति हैं।

भगवान शिव और देवी पार्वती (शक्ति)के दूसरे पुत्र कार्तिकेय को **सुब्रह्मण्यम, षणमुख, षडानन, स्कंद** आदि कई नामों से जाना जाता है। दक्षिणी भारत में श्री कार्तिकेय एक लोकप्रिय देवता हैं और उन्हें **मुरूगन** के नाम से जाना जाता है।

श्री कार्तिकेय ~ जन्म कथा

पृथ्वी पर सूरपद्म और उसके भाइयों, सिंहमुख व ताड़कासुर, का आतंक अपने चरम पर पहुंच चुका था। ताड़कासुर को यह वरदान प्राप्त था कि शिव और पार्वती की संतान ही उसका विनाश कर सकती है। । लेकिन भगवान शिव तो सती आत्मदाह के पश्चात मोह के सभी बंधनों से मुक्त होकर हिमालय पर तपस्या करने चले गए थे।

ऐसे में उनके मन में पार्वती के लिए आकर्षण विकसित होना एक कठिन कार्य था। कामदेव के बाण की वजह से वे पार्वती के प्रति आकर्षित हुए । यद्यपि उन्होंने कामदेव को अपने क्रोध में भस्म कर दिया था, लेकिन शिव के भीतर छिपी क्रोध की ज्वाला अभी तक समाप्त नहीं हुई थी। जब अग्नि देव उनके वीर्य को लेकर जा रहे थे, तो उसके ताप के कारण उन्होंने उसको गंगा जी में गिरा दिया और वे इस वीर्य को शरवन वन तक ले गईं जहां उनसे छः बच्चों का जन्म हुआ।

उस वन में विहार करती छः कृतिका कन्याओं (कृतिका नक्षत्र के छः तारों) ने उनका पालन पोषण किया। जब माँ पार्वती ने अपने पुत्रों को देखा तब वे सभी छः शीश वाले एक शिशु में बदल गए। कृतिकाओं द्वारा लालन-पालन होने के कारण उस बालक का नाम कार्तिकेय पड़ गया।

श्री कार्तिकेय ~ युद्ध के देवता

श्री कार्तिकेय वीरता के प्रतीक और युद्ध के देवता हैं। उनका जन्म राक्षसों को नष्ट करने के लिए ही हुआ है अर्थात वह मनुष्यों की नकारात्मक प्रवृत्तियों का नाश करते हैं।
कार्तिकेय के छः मुखों के प्रतीक स्वरूप, उनका एक नाम षडानन भी है, अर्थात जिसके छः सिर हैं। उनके छः शीश पांच इंद्रियों और मन के प्रतीक हैं। वे यह भी इंगित करते हैं कि यदि मनुष्य जीवन की इस लड़ाई में कुशलता से खुद का नेतृत्व करना चाहता है तो उसे हमेशा इन छः राक्षसी अवगुणों से सतर्क रहना चाहिए। ये छः अवगुण हैं- **काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।**

उनके छः सिर उन्हें सभी दिशाओं में देखने में सक्षम बनाते हैं। उनकी यह महत्वपूर्ण विशेषता सुनिश्चित करती है कि श्री कार्तिकेय उन सभी प्रकार के प्रहारों का मुकाबला करने में सक्षम हैं, जो उन्हें मार सकते हैं ।

श्री कार्तिकेय एक हाथ में भाला लिए हुए हैं और उनका दूसरा हाथ हमेशा भक्तों को आशीर्वाद देता है। उनका वाहन एक पवित्र पक्षी मोर है जो अपने पैरों से नाग को पकड़ता है, यह नाग लोगों के अहंकार और इच्छाओं का प्रतीक है। मोर हमारी हानिकारक आदतों के विनाश और कामुक इच्छाओं पर विजय का प्रतीक है। इस प्रकार उनका जीवन हमें हमेशा नकारात्मक व्यवहार पर विजय पाने हेतु प्रेरित करता है।

श्री कार्तिकेय के सम्मान में मनाए जाने वाले त्योहार

कार्तिक पूजा- यह एक हिंदू बंगाली त्योहार है और पश्चिम बंगाल में अधिक लोकप्रिय है। यह त्यौहार बंगाली कार्तिक महीने के अंतिम दिन दुर्गा पूजा की तरह ही बड़े उत्साह मनाया जाता है।

कार्तिक दीपम- भगवान कार्तिकेय की पूजा के लिए प्रमुख त्योहारों में से एक कार्तिक दीपम है। यह रोशनी का एक त्योहार है जो मुख्य रूप से हिंदू तमिलों द्वारा मनाया जाता है। इसे कार्तिक नक्षत्र में श्री कार्तिकेय के जन्मोत्सव के उपलक्ष में मनाया जाता है।

थाईपुसम - यह भी तमिल समाज के लोगों द्वारा मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन देवी पार्वती ने ताड़कासुर की राक्षस सेना को हराने के लिए भगवान मुरूगन को एक दैवीय भाला दिया था, इसलिए यह बुराई पर अच्छाई की जीत का उत्सव है।

सहज योग परिवार की ओर से श्री कार्तिक दीपम की हार्दिक शुभकामनाएं।

www.sahajayoga.org.in | Toll Free - 1800 2700 800

श्री कार्तिकेय ~ सेनापति (Commander in Chief)

श्री कार्तिकेय के बारे में कहा जाता है कि **वे देवों की सेना के सेनाध्यक्ष हैं**। वे सभी गणों के कप्तान या नेता है अर्थात वे उन पर नियंत्रण करते हैं। नियंत्रण में होना, स्वामी होने से अलग है ।

जब आप नियंत्रण में होते हैं तो स्वामित्व कहीं खो जाता है और यही वह स्थिति है जो हमें अब प्राप्त करनी है। कार्तिकेय के हाथों में अबोधिता की कमान हैं और वे दूसरों पर और स्वयं अपने पर नियंत्रण करने की शक्ति देते हैं।

दूसरों पर नियंत्रण की शक्ति पुरुषों में वाकचातुर्य से, उनके ओजस्वी होने से, उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों के माध्यम से आती है। महिलाओं के लिए यह उनकी प्रेम शक्ति से, उनकी सहनशीलता से, उनके सुंदर व्यवहार, क्षमा, करुणा के माध्यम से आती है।

जब किसी व्यक्ति का अपने पर नियंत्रण हो जाता है तो वह किसी भी हानिकारक आदत से प्रभावित नहीं होता है। बल्कि वह हमेशा इन आदतों के ऊपर नियंत्रण पाने के हेतु वीरता दिखाता है और उन पर विजय प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी सिगरेट, शराब, मादक पदार्थों के व्यसन का शिकार नहीं होता है और ना ही उसे depression या आत्महत्या जैसे विचारों से जूझना पड़ता है। **साथ ही श्री कार्तिकेय की शक्ति, काले जादू और तंत्र-मंत्र के दुष्प्रभाव से भी हमारी रक्षा करती है।**

श्री कार्तिकेय के गुण और सहज योग

लेकिन इन गुणों को अपने अंदर कैसे जागृत किया जा सकता है? केवल उनकी पूजा करने या बातें करने या इनके बारे में पढ़ने से तो ऐसा संभव नहीं है। इसे श्रीमाताजी निर्मला देवी ने सहज योग के माध्यम से बड़ी ही सुगमता से सफल बनाया है। सहज में ही हमारी कुण्डलिनी शक्ति का जागरण कर हमें चारों और फ़ैली परमात्मा ही की शक्ति से योग कराया है।

हमारी उत्क्रांति और आध्यात्मिक उन्नति के लिए, हमारी रीढ़ की हड्डी में सात चक्र और कुण्डलिनी शक्ति स्थित हैं। **ये सभी चक्र हमारे शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए उत्तरदायी हैं ।** जब कुंडलिनी जागृत होती है, तो वह चक्रों को पोषित करती है और उन्हें संघटित करती हुई हमें परमात्मा के दिव्य प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से जोड़ देती है। कुंडलिनी जागरण और चक्रों के पोषण का एक महत्वपूर्ण लाभ यह होगा कि व्यक्ति में एक आंतरिक संतुलन आएगा और वह स्वस्थ हो जाएगा।

व्यक्ति के भीतर कुंडलिनी शक्ति के जागरण से सभी चक्रो के गुण प्लावित, पोषित होने लगते हैं। जब यह शक्ति हमारे दाएं मूलाधार चक्र को स्पर्श करती हुई पोषण प्रदान करती है तो **इस चक्र के अधिष्ठित देवता श्री कार्तिकेय अपने गुण और शक्तियों से व्यक्ति को आशीर्वादित करते हैं और इस प्रकार सहजयोग के माध्यम से मनुष्य अपनी हानिकारक आदतों और नकारात्मक विचारों और तंत्र-मंत्र के दुष्प्रभावों पर विजय प्राप्त करता है।**

श्री कार्तिकेय का वास हमारे सूक्ष्म तंत्र के मूलाधार चक्र में दाईं ओर है।

अपनी दिव्य शक्तियों को जागृत करें
अपना आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करें

सहज योग ध्यान
पूर्णतः निःशुल्क है

Sahaja Darshan Prachaar aur Prasaar Samiti
adlakhagk@gmail.com | +91 98712 78936
www.nirmaldham.org | www.sahajayogamumbai.org